परमात्मा के भी अरमान हैं आप से...

हमारे अंतर मन की चाहत थी कि भगवान के दर्शन हो जाएं बस! मेरा जीवन धन्य हो जाए। दिल की चाह भगवान ने न सिर्फ सुन ली किंतु उनके दर्शन भी हुए, हमें भी दर्शनमूर्त बनाया। आखिर वो तो भगवान है ना! हमने दिल से एक कदम आगे बढ़ाया, बाबा ने हज़ार गुणा कदम आगे बढ़ाये। तभी तो उन्हें भगवान कहते हैं। भोलानाथ कहते हैं। हमारा भी सौभाग्य है, उनसे रूबरू भेंट हुई, मिलन हुआ। हम धन्य हो गये। पर ज़रा सोचें भगवान की भी कुछ आश होगी ना! क्या हम भगवान के अरमान पूरे कर सकते हैं? जिसमें हमारा भी अरमान समाया हुआ है?

ये संगमयुगी जीवन जो हीरे तुल्य है इसको ऐसे ही समाप्त कर दिया तो क्या किया? सब कुछ लुटाके होश में आये तो क्या फायदा? हर कोई चाहता है मेरा जीवन विशेष हो। बाबा (शिव परमात्मा) कहते हैं हर ब्राह्मण आत्मा विशेष है। भगवान सत्य स्वरूप है इसलिये उनके बोल भी सत्य हैं। उनका एक-एक अक्षर सत्य है। मिश्री को आप जिधर से भी चखेंगे उसमें मिठास ही होगी, नमकीन नहीं होगी। मिश्री का स्वभाव ही यह है, स्वरूप भी यह है। सत्य स्वरूप

भगवान, उनके द्वारा कही हुई हर बात सत्य है। वह हमें कहता है कि आप मेरे विशेष बच्चे हैं। आप सबमें विशेषताएँ हैं क्योंकि करोड़ों में से आप एक हैं। आपको मैं उनमें से चुन-चुनकर लाया हूँ। भगवान का हमारे लिये एक प्लैन(योजना) है। वह चुनकर ऐसे ही तो नहीं लाया है! हम कोई चीज़ ढूढकर लाते हैं या बाज़ार से खरीद कर लाते हैं तो हमारे मन में कोई उद्देश्य होता कि इसको ऐसे प्रयोग करेंगे या इससे ऐसा काम लेंगे। भगवान तो परम बुद्धिवान है, उन जैसे बुद्धिवान तो कोई है ही नहीं। वह बुद्धिवानों का भी बुद्धिवान है। वह हमें लाया है करोड़ों में से, वह भी सिक से ,प्यार से। वह भविष्य सृष्टा भी है। कई बार कहा जाता है कि प्राचीन ऋषि-मुनी भविष्य दृष्टा थे, लेकिन उन्होंने भविष्य देखा भी था क्या! चलो, मान भी लेते हैं थोड़ा बहुत देख भी लिया होगा, परंतु भविष्य सृष्टा तो नहीं थे! उन्होंने कोई सतयुग की स्थापना तो नहीं की! युग परिवर्तन तो नहीं किया! मनुष्य मात्र के भाग्य की रेखा तो नहीं बदली! परंतु परमात्मा तो विधि के विधाता हैं। नये जग के निर्माता हैं। अगर उन्होंने हमें चुना है, तो किस उद्देश्य से चुना है? उनको नये जगत का निर्माण करना है इसलिए चुनकर लाया है। उनके मन में भी यही है कि नये जगत के लिए इनको लायक बनाऊंगा। ये उनके ही मन में है। भगवान का संकल्प अटल है, उसका जो चिंतन होता वह अमर चिंतन होता है, अमोघ(अचूक, अव्यर्थ), चिंतन होता है। उसके रास्ते को कोई पहाड़ मोड़ नहीं सकता, कोई तूफान रोक नहीं सकता। सारे मनुष्य एक तरफ हो जायें, लेकिन भगवान का संकल्प व्यर्थ नहीं जा सकता, खाली नहीं जा सकता। उसका हर एक तीर अचूक है, निशाने पर ही बैठता है। क्योंकि वह सर्वशक्तिवान है, परम पवित्र है और भविष्य को स्पष्ट रूप से जानता है, देखता है। वैसे ही करने में समर्थ है, इसलिए उसका वार कैसे खाली जा सकता है? वह स्वयं कह रहा है कि आप मेरे बच्चे हैं, मैं स्वयं आपको लेकर आया हूँ। शेर का बच्चा, शेर ही होगा ना! ऐसे ही सर्वशक्तिवान का बच्चा मास्टर सर्वशक्तिवान ही होगा ना!

बाबा यह भी कहते हैं कि सतयुग के निर्माण के लिए आप विधायक(लॉ मेकर्स) हो। तो लॉ मेकर्स विधि निर्माता को 'मनु' कहते हैं, जिसने मनुस्मृति लिखी। उसने और भी ग्रंथ लिखे हैं, लेकिन उन में से 'मनु स्मृति' प्रसिद्ध है। धर्म क्या है, अधर्म क्या है, मनुष्य को क्या करना चाहिए जो नियम हैं, मर्यादाएं हैं, द्वापरयुग से चले आते हैं, उनको मनु ने लिपि-बद्ध किया जिसका नाम हुआ 'मनु स्मृति'। आज तक लोग उसे धर्मशास्त्र मानते हैं। उसके अनुसार ही ब्राह्मण लोग, पण्डित-पण्डे-पुजारी वर्ग चलते हैं। नियम बनाने वालों को 'मनु' कहते हैं।

परमात्मा का फरमान है कि यही मेरे बच्चे जो विधायक हैं, श्रेष्ठ दुनिया के निर्माण में अहम रोल निभाने वाले हैं, पूर्वज हैं, सर्वविघ्नहर्ता हैं, सारी सृष्टि से दुःखों के नामों-निशान मिटाने वाले हैं। ऐसी उम्मीद हमारे प्यारे बाबा ने हममें रखी है। दुनिया की अंतिम अहुति में चारों ओर आग लगी है, शीतल जल डालने वाले, हर एक को ठंडक की छाया देने वाले यही बच्चे हैं। उन सबका भी भाग्य जगाने वाले हैं। ऐसे श्रेष्ठ अरमान हम पर रखे हैं जिसमें हमारा भी अरमान समाया हुआ है उसे पूरा करेंगे ना! क्या कह रही आपके दिल की धड़कनें, हम नहीं करेंगे तो और भला कौन करेगा! ये तो हमारा परम सौभाग्य है, परमात्मा की उम्मीदों पर खरा उतर बाबा के दिल तख्त पर बैठ जायें। यह अवसर व्यर्थ ना चला जाये।

परिवर्तन का प्रैक्टिकल सबूत हमें देना है...

राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी जी

बाबा ने हर स्थान पर कैसे अपने बच्चों को ईश्वरीय सेवा के निमित्त बनाया है, वो इस संगठन को देख स्पष्ट समझ सकते हैं। और हम सबका लक्ष्य एक ही है कि हमें स्व परिवर्तन से विश्व का परिवर्तन करना है। यह बहुत बड़ा ठेका है, सब ठेकेदार बैठे हैं। इसको निभाने के लिए समय प्रति समय बापदादा हमें इशारा देते रहते हैं। अब उन इशारों को, उस लक्ष्य को लक्षण के रूप में प्रत्यक्ष करना है। हरेक जो भी निमित्त बने हुए विशेष आत्मायें हैं वो यह ज़रूर समझते हैं कि हमें परिवर्तन होना ही है और विश्व को भी परिवर्तन करना ही है। लेकिन बाबा आजकल हमारी चलन और चेहरे से प्रत्यक्ष रूप देखने चाहते हैं क्योंकि लोग आजकल ज्ञान को इतना कैच नहीं कर सकते हैं जितना चेहरे और चलन से कैच कर सकते हैं। हमारी आंतरिक भावनायें, आन्तरिक स्मृति-स्वरूप का हरेक को अनुभव है लेकिन बाबा कहते हैं जब बाप की प्रत्यक्षता होगी तब विश्व परिवर्तन होगा।

तो आप सभी यह लक्ष्य तो रखते ही हो कि बाबा को प्रत्यक्ष करना ही है, यह पक्का है? करना ही है, होना ही है या हो जायेगा... समय आयेगा अपने आप हो जायेगा यह तो नहीं सोचते हो? हमें करना है। इस कार्य में मैं अर्जुन हूँ, हरेक यह समझकर आगे बढ़ करके बाबा को प्रत्यक्ष करें। और बाबा ने भी यही कहा कि बहुत समय से बाबा वायदे कराते रहते हैं और बच्चे भी वायदे सदा लिख करके देते ही हैं। तो बाबा यही चाहता है कि मेरी एक ही आशा है और उस आशा के दीपक तो हम सब हैं ही। तो सभी मिलकर ऐसा संगठन बनाओ जो कोई भी आवे तो ऐसा समझे कि यह दुनिया में रहते हुए कोई साधारण मनुष्य नहीं हैं, यह कोई अलौकिक हैं। अलौकिक आत्मा का हर कर्म ऑटोमेटिकली अलौकिक हो जायेगा, तो अभी लक्ष्य और लक्षण में आप देखें कि उसमें अभी तक अन्तर है या समान हो गये हैं? जैसे बाबा कहते मेरा एक-एक बच्चा राजा बच्चा है, तो राजा का अर्थ ही है कंट्रोलिंग पॉवर और रूलिंग पॉवर। तो बाबा यही चाहता है कि इसमें पहले खुद को प्रत्यक्ष करके फिर बाबा को प्रत्यक्ष करें। इस संकल्प को साकार करना ही है। आप पाण्डव नहीं करेंगे तो कौन करेगा? ऐसे दृढ़ संकल्प के द्वारा हम हलचल में आने के बजाय अचल बन जायें। अचल बनकरके बाबा की आशाओं को प्रत्यक्ष कर्म में लायें। संकल्प तो करते हैं लेकिन कर्म में भी वही संकल्प प्रैक्टिकल में आये, उसका अटेन्शन रखकर के हम बाबा को दिखायेंगे कि बाबा, अभी जो आप चाहते हैं, जो उम्मीदें हमारे में रखते हैं, वो हम प्रैक्टिकल कर रहे हैं। लेकिन उसमें भी देखना है कि एक-दो के तरफ देखते भी आत्मा रूप का पाठ बहुत पक्का करना है। यह आत्मा बाबा का बच्चा है। पुरुषार्थी महारथी है। उस दृष्टि से हम एक-दो में संगठन में चलेंगे और अभ्यास करेंगे और बार-बार अपने को चेक करेंगे।

तो हमें यह करना है कि मैं आत्मा और यह मेरे साथी कर्मचारी कर्मेन्द्रियां जो हैं, उसको चला करके बाबा ने जो हमें साक्षीदृष्टा का तख्त दिया है, उस पर बैठ करके खेल देखने का अभ्यास करें। समय हमारा सदा ही याद में और फरिश्ते की लाइफ में जाये। परिवर्तन का प्रैक्टिकल हम सबूत दें।

सिम्पल बात को बड़ी नहीं बनाओ... बड़ी को छोटी बना दो

राजयोगिनी दादी जानकी जी

बाबा बहुत अच्छा है, क्यों? हमारा बाप टीचर बन गया, कभी बोलता विचार सागर मंथन करो, कभी बोलता बुद्धि को सतोप्रधान बनाओ। कभी कुछ, कभी कुछ बाबा ऐसा बताता है ताकि हम बिज़ी रहें, अच्छे से अच्छे ज्ञान को धारण करो। इम्पॉसिबल बात को बाबा पॉसिबल कर देता है। बुद्धि सालिम(सम्पूर्ण)है, बाबा बहुत अच्छा है। एक बाबा दूसरा न कोई तो विक्ट्री है। व्हाय नहीं कहना है, ऐसे बनना है। विज़डम माना शॉर्टकट वे है, सिम्पल वे सिर्फ सैम्पुल बनना है, वर्ड ऑफ विज़डम। कैसे करूँ, क्या करूँ, ऐसे नहीं बोलो। सिम्पल बात को बड़ी बात नहीं बनाओ। बड़ी को छोटी बना दो तो दोष नहीं है और औरों का दोष निकालके छोटी बात को बड़ा बनाया तो मेरा दोष हो जायेगा। ऐसा यह क्यों करता? सम्भलके बोल, यह सोचो भी नहीं, मुख से नहीं बोलो। यह वर्डस मुख से निकलता है तो विज़डम कैसी है, कितनी है, अन्दर से दिखाई पड़ता है। अन्दर के चेहरे से दिखाई देता है। इसलिए बुद्धि को सतोगुणी से सतोप्रधान बना दो। थोड़ा भी सोचने, बोलने में एक्यूरेट नहीं है तो बाबा देखेगा मैं कुछ और चाहता हूँ यह करता कुछ और है। बात को थोड़ा भी बनाने में नुकसान है, बड़ी को छोटा बनाने में बहुत फायदा है।

मुख से शब्द ऐसे निकलें जो 20 साल पहले वाले शब्द भी याद आवें तो खुशी की आवाज़ निकले क्योंकि संगमयुग का महत्त्व है। जितनी पढ़ाई उतनी कमाई। अन्दर संकल्प की जो शुद्धि है ना, वह औषधि है। यह औषधि जो जितना यूज़ करता है उसके लिए उतना अच्छा होगा। अन्त मते तक बाप, टीचर, सतगुरू तीनों को खुश करना है तो धर्मराज को भी खुश करो। मेरे से तीनों खुश हैं, यही विज़डम है। तीनों को खुश करना माना धर्मराज को खुश करना। है रूप तीन ही लेकिन उसके अन्दर में धर्मराज छिपके ऐसा बैठा है, अभी सुबह-शाम हरेक देखें, मेरी खुशी गुम क्यों हुई? धर्मराज ने सजा दी। अभी देता है थोड़ा कान पकड़के सावधान करने के लिए, जो बाबा ने कहा था मुरली सुनने समय अगर बुद्धि इधर-उधर गयी तो योग नहीं है।

देखा जाता है सुनता यहाँ है, पर बुद्धि बाहर है तो बात अन्दर नहीं गयी इसलिए बाहर में सबके साथ रहते हुए भी अन्तर्मुखी है तो वो सदा सुखी है। मेरे संग सेवा करने वाले भी सुखी हों। परमात्मा तो सबको सुख-शान्ति में सम्पन्न बना देता है माना सुख शान्ति ही सम्पत्ति है। तो विज़डम बाबा की है, सुनने वाले आप हैं, अगर आप न सुनते तो मैं कोई काम की नहीं होती। अपनी बुद्धि को अभिमान से फ्री रखो। अपमान की फीलिंग कभी न आवे, यह मंज़िल ऊंची है।

असुर संहारिनी, भक्तों की रक्षा करने वाली- शिव शक्तियां

सर्वशक्तिवान बाप ने गुप्त रूप में हम शक्तियों को शक्ति दी है। असुर संहारिनी, भक्तों की रक्षा करने वाली हम सब शिव शक्तियां हैं। शिव शक्ति अर्थात् शिव परमात्मा से प्राप्त हुई शक्ति जिससे हम असुर संहारिनी बने हैं। स्वयं से अथवा सारे विश्व से आसुरी वृत्तियों को समाप्त करने का काम हमारा है। शक्तियों का ही गायन है असुर संहारिनी, दूसरे तरफ शीतला देवी का भी गायन है। तो सभी को भक्तों का आहवान सुनाई दे रहा है? भक्त हमें पुकार रहे हैं, चिल्ला रहे हैं ओ माँ, ओ माँ... इन शक्तियों को ब्रह्मचारिनी कन्या ही दिखलाया है। आज जब मैं आपके सामने आई तो मैं भक्तों की आवाज़ सुनकर आई थी। प्यारे बाबा के गुण गा रही थी- ओ सर्वशक्तिवान बाबा, आपने हमें कितना गुप्त रूप में रखा है, जिनका आज भक्त गायन कर रहे हैं। स्वयं से पूछना है- क्या मैं वही पतित संस्कारों को संहार करने वाली शक्ति हूँ? शक्तियों को सहस्त्र भुजाधारी दिखलाते हैं, तो क्या हम ऐसी शक्तियां हैं?

सवेरे योग में यही महसूस हो रहा था कि हमारे हाथ में ज्ञान के अस्त्र-शस्त्र हैं, योग का स्वदर्शन चक्र है। दैवी गुण रूपी कमल फूल है, भिन्न-भिन्न भुजा में भिन्न-भिन्न अस्त्र-शस्त्र हैं। ये हमारा यादगार है कि हम सदा शस्त्रधारी भुजायें हैं। कोई भुजा हिलती-डुलती तो नहीं है? बाबा ने हमें अष्ट शक्तियां दी हैं। क्या ऐसे कहेंगे कि 6 शक्तियां तो हैं, दो नहीं हैं? हम असुर संहारिनी हैं तो स्वयं में देखो कि आसक्ति रूपी असुर तो नहीं हैं? मान-शान रूपी असुर तो नहीं हैं?

हम सबका उद्धार करने वाली उद्धारमूर्त शक्तियां हैं तो हमारे में सर्व के प्रति स्नेह, सहयोग की भावना रहती है या किसी के प्रति घृणा की, ईर्ष्या की, नफरत की भावना भी रहती है? हमें बाबा से सर्व शक्ति लेकर सबको जीयदान देना है, प्राणदान देना है।

राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि जी

मोह रूपी असुर तो नहीं है? शक्तियां कहें मेरे में छोटा-मोटा असुर है तो क्या उन्हें असुर संहारिनी कहेंगे? शक्तियां जितनी संहारी हैं उतनी कल्याणी हैं। निर्भय, निर्वैर हैं। हमारे में भय है? हमारा किसी से वैर है? शक्तियों की महिमा में ऐसा नहीं कहा जाता है कि भक्तों की वैरी हैं, नहीं। असुरों की संहारी भक्तों की रखवाली करने वाली हैं। हम सबका उद्धार करने वाली उद्धारमूर्त शक्तियां हैं तो हमारे में सर्व के प्रति स्नेह, सहयोग की भावना रहती है या किसी के प्रति घृणा की, ईर्ष्या की, नफरत की भावना भी रहती है? हमें बाबा से सर्व शक्ति लेकर सबको जीयदान देना है, प्राणदान देना है। बाबा ने हमें कितना महान बनाया है, कितनी हमारी भक्त महिमा करते, कितना हमारा मान-शान-गायन आधाकल्प से भक्त गाते हैं। जब ऐसी ऊंची सीट पर बैठ अपना यादगार देखते तो बाबा के गुण गाते। जग मेरे मान-शान का गायन करता, मेरे बोल के साथ मेरा गायन है। हमें कहा ही गया है जगत अम्बा, दुर्गा काली, शक्ति। मैं जगत की माँ हूँ, सब मेरे लिए छोटे बच्चे हैं क्योंकि बाबा कहते कि बिचारों को यही ज्ञान नहीं है कि इनका बाप कौन है। बिचारे उनको कहा जाता है, जिनको ज्ञान नहीं। बाबा ने हमें त्रिकालदर्शी, महान से महान बनाया है, कितनी ऊंची सीट पर बाबा ने बिठाया है।

भाषण करने से पहले देखो मेरी स्टेज ठीक है, जो भक्त मेरा साक्षात्कार करें! जब तक हम स्वयं की सीट पर या स्टेज पर नहीं बैठे हैं तब तक हम दूसरों की क्या सेवा करेंगे! अगर सदा मेरी वह स्थिति नहीं तो भक्त मेरा क्या साक्षात्कार करेंगे? सबको सर्विस का बहुत शौक रहता है, जोश रहता है। सेवा के साथ-साथ स्वयं के स्थिति की सीट भी ठीक है? जैसे लॉ और लव का बैलेन्स, जीवन में बराबर रखते हैं, वैसे सेवा के साथ-साथ स्वयं की स्टेज है? प्लैन बनायेंगे तन-मन-धन से सर्विस में लग जायेंगे, परन्तु कई बार अपनी स्टेज खो बैठेंगे। उसको भाषण के लिए कहा मुझे नहीं कहा, इसे सब चान्स देते हैं, मुझे नहीं। बड़े का मान रखते हैं, छोटों का नहीं। पता नहीं कितने सवाल सर्विस की स्टेज के साथ उठाते हैं। गये स्टेज तैयार करने और अपनी स्टेज खराब कर दी। उस समय अपनी स्टेज को तैयार करने का नहीं रहता। अरे तुम अपना रिकार्ड क्यों खराब करते हो? सदा ये सोचो हम गॉडली स्टूडेंट हैं। सब सब्जेक्ट में हमारा बैलेन्स बराबर हो।